आनन्द लेकर खुश हुआ लेकिन वचनों से बंधा हुआ था सो डसना तो था । चौथ बिन्दायक जी ने सोचा कि इसकी रक्षा नहीं की तो कलयुग में अपने को कौन पूजेगा। चौथ माता तलवार बनी बिन्दायक जी ढाल बने। औरे जैसे ही साँप डसने लगा तो उसे मार दिया। साहुकार के बेटे को नींद नहीं आ रही थी । साँप के मरते ही उसने अपनी पत्नी को उठाया और चौपड़ पासे खेलने लगा ।

सुबह देर तक बेटा बहू उठे नहीं तो माँ ने कहा बेटा तो थका हुआ था पर बहू क्यों नहीं उठी ।जाकर देखा तो खून ही खून हो रहा था उसने कहा मेरे बेटे बहू को किसी ने मार दिया। तब अन्दर से बेटा बोला मां हमारा बेरी दुश्मन मरा है, यहाँ सफाई करावो तब हम बाहर आयेंगे। माँ ने वहां सफाई करवाई वे बाहर आये। नीचे आकर उसने मां से पूछा माँ मेरे पीछे से किसी ने कोई धर्म किया क्या ? तो बहू बोली कि मैंने किया, इस पर सास ने कहा कि तूने क्या किया तुझे मैं रोज चार समय का खाना देती थी। बहू बोली मैं महिने में एक चौथ का व्रत करती थी। सुबह का खाना पानी वाली को देती। दूसरी बार का गाय के बछड़े को खिलाती तीसरी बार का ऊठीयाणा में गाड देती व चौथी बार का मैं पूजा करके चन्द्रमा देखकर फिर खाती थी। मैंने पूजा के लिए बनिया की दुकान से घी गुड़ मंगवाया सो उसका जाकर हिसाब करो ।सास ने पानी वाली से पूछा तो उसने कहा कि महिने में एक दिन मुझे रोटी देती थी ।बछड़े से पूछा तो उसके मुँह से फेफ के फूल गिरे ।ऊठीयाणा खोदा तो रोटी के सोने के चक्कर निकले । बनिये से पूछा तो उसने भी कहा कि महीने में एक बार मेरे से घी गुड़ मंगवाती थी। फिर बहू ने कहा कि मुझे अब वैसाख की चौथ का उद्यापन करना है ।सास बहु ने चौथ माता का व्रत व उद्यापन धूमधाम से किया और आराम से जीवन बिताया ।हे ! चौथ माता उस पर प्रसन्न हुई जैसी सब पर प्रसन्न होना और सभी की मनोकामना पूरी करना। अमर सुहाग देना।

विशेष – कहानी सुनने के बाद चौथ माता के गीत गाये ।